

आनृशंस्य पुं. (तत्.) 1. दयालुता 2. कृपालुता 3. मृदुलता।

आनेता वि. (तत्.) लाने वाला।

आनैपुण, आनैपुण्य वि. (तत्.) 1. अदक्षता, अकौशल 2. भद्दापन।

आनैश्वर्य पुं. (तत्.) ऐश्वर्य या अधिकार का अभाव।

आन्न पुं. (तत्.) 1. अन्न या खाद्य संबंधी 2. अन्न से बना हुआ 3. जिसके पास अन्न या खाद्य-सामग्री (प्रस्तुत) हो।

आन्वयिक पुं. (तत्.) 1. कुलीन 2. सुव्यवस्थित।

आन्वीक्षिकी स्त्री. (तत्.) 1. आत्मविद्या 2. तर्कविद्या, न्याय 3. उचित, क्रमानुसार।

आप सर्व. (देश.) 1. तू, तुम (मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम) का आदरार्थक रूप 2. खुद, स्वयं प्रयो. मैं आप चली जाऊँगी, मेरे साथ कोई नहीं जाएगा। पुं. (तत्.) 1. ईश्वर, परमात्मा 2. आप्त व्यक्ति 3. जल, पानी 4. जलसमूह, जल-प्रवाह 5. एक वसु 6. प्राप्ति मुहा. आप-आप करना- खुशामद करना; आप-से-आप-स्वयं, खुद-ब-खुद, अपने आप; आप-ही-आप-स्वतः अपने मन से, मन ही मन।

आपई सर्व. (देश.) 1. आप ही, स्वयं ही 2. सम्मान पूर्वक आप ही।

आपक वि. (तत्.) प्राप्त करने वाला।

आपकाज पुं. (तद्.) अपना काम।

आपकाजी वि. (तद्.) केवल अपना स्वार्थ देखने वाला, खुदगर्ज।

आपक्व वि. (तत्.) जो अच्छी तरह न पका हो, कम पका हुआ।

आपगा स्त्री. (तत्.) (आप अर्थात् जल को बहाकर ले जाने वाली) नदी।

आपगेय पुं. (तत्.) (नदीपुत्र) भीष्म पितामह।

आपगोपम वि. (तत्.) नदी के समान।

आपगोपमा वि./स्त्री. (तत्.) आपगोपम, नदी के समान।

आपचारी वि. (तत्.) स्वेच्छाचार, अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति, स्वेच्छाचारी।

आपण पुं. (तत्.) 1. हाट, बाजार 2. दूकान 3. तहबाजारी।

आपण-विपणि पुं. (तद्.) खरीदने और बेचने का कार्य, क्रय-विक्रय, खरीद-फरोख्त।

आपणा वि. (देश.) अपना, स्वयं का (आंचलिक प्रयोग)।

आपणिक वि. (तत्.) 1. बाजार संबंधी 2. बाजार से प्राप्त पुं. 1. बाजार 2. दुकानदार 3. दुकान का कर।

आपतन पुं. (तत्.) 1. पहुँचने का कार्य 2. ऊपर से गिरने का कार्य 3. घटित होने का कार्य 4. अचानक मुलाकात का कार्य।

आपतरमणीय वि. (तत्.) 1. तात्कालिक सुख-संतोष प्रदान करने वाला 2. देखने में सुंदर प्रतीत होने वाला।

आपत् स्त्री. (तत्.) 'आपद्' का समासगत रूप।

आपत्काल पुं. (तत्.) 1. विपत्ति, दुष्काल, कुसमय 2. अचानक दुर्घटना के घटने का समय प्रयो. धीरज, धरम, मित्र अरु नारी, आपत्काल परखिये चारी।

आपत्कालिक वि. (तत्.) सामान्य दैनिक व्यवस्था की अनुपस्थिति में, असामान्य दैनिक व्यवस्था की उपस्थिति, बुरा समय, ऐसे समय में नागरिकों के मूलाधिकार प्रायः स्थगित किए जाते हैं।

आपत्कृत वि. (तत्.) (आपत्+कृत) आपत् स्थिति में किया हुआ, आपात्कालीन समय में किए गए कार्य।

आपत्कृत ऋण पुं. (तत्.) आपत्कालीन समय में, स्थिति सुधारने के लिए लिया गया आंतरिक अथवा विदेशी ऋण।